श्री गणेशाय नमः

श्री बाबा गंगाराम देवाय नमः

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दनाय नमः

विषय पृष्ठ संख्या

श्री बाबा गंगाराम चालीसा..... 2 से 4

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन चालीसा..... 5 से 7

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन अष्टक..... 8 से 10

श्री बाबा गंगाराम दोहावली..... 11 से 13

श्री बाबा गंगाराम आरती..... 14 से 15

अथ

श्री बाबा गंगाराम चालीसा

अलख निरंजन आप हैं, निरगुण सगुण हमेस।
नाना विधि अवतार धर, हरते जगत कलेश।।
बाबा गंगारामजी , हुए विष्णु अवतार ।
चमत्कार लख आपका, गूंज उठी जयकार ।।

चौपाई

गंगाराम देव हितकारी, वैश्य वंश प्रगटे अवतारी ।।1।।
पूर्व जन्म फल अमित रहेऊ , धन्य धन्य पितु मातु भयेऊ ।।2।।
उत्तम कुल उत्तम सतसंगा, पावन नाम राम अरू गंगा ।।3।।
बाबा नाम परम हितकारी, सत सत वर्ष सुमंगलकारी ।।4।।
बीतहि जन्म देह सुधि नांहि, तपत तपत पुनि भयेऊ सुसाई ।।5।।
जो जन बाबा में चित लावा, तेहि परताप अमर पद पावा ।।6।।
नगर झुंझुनूं धाम तिहारो, शरणागत के संकट टारो ।।7।।
धरम हेतु सब सुख बिसराये, दीन हीन लखि हृदय लगाये ।।8।।
एहि विधि चालिस वर्ष बिताये, अन्त देह तजि देव कहाये ।।9।।
देवलोक भई कंचन काया, तब जनहित संदेश पठाया ।।10।।
स्वप्न देवकीनन्दन पावा, भावी करम जतन बतलावा ।।11।।
आपन सुत को दर्शन दीन्हों, धरम हेतु सब कारज कीन्हों ।।12।।

नभ वाणी जब हुई निशा में, प्रगट भई छवि पूर्व दिशा में ।।13।।
ब्रम्हा विष्णु शिव सहित गणेशा, जिमि जनहित प्रगटेउ सब ईशा ।।14।।
चमत्कार एहि भांति दिखावा, अन्तरध्यान भई सब माया ।।15।।
सत्य वचन सुनि करहिं विचारा, मन मंह गंगाराम पुकारा ।।16।।
जो जन करई मनौती मन में, बाबा पीर हरहिं पल छन में ।।17।।
ज्यों निज रूप दिखावहिं सांचा, त्यों त्यों भक्तवृन्द तेहिं जांचा ।।18।।
उच्च मनोरथ शुचि आचारी, राम नाम के अटल पुजारी ।।19।।
जो नित गंगाराम पुकारे, बाबा दुख से ताहिं उबारे ।।20।।
बाबा में जिन्ह चित्त लगावा, ते नर लोक सकल सुख पावा ।।21।।
परहित बसहिं जाहिं मन मांही, बाबा बसहिं ताहिं तन माहिं ।।22।।
धरहिं ध्यान रावरो मन में, सुख संतोष लहैं तन मन में ।।23।।
धर्म वृक्ष जेहि तन मन सींचा, पार ब्रम्ह तेहि निज में खींचा ।।24।।
गंगाराम नाम जो गावे, लहि बैकुण्ठ परम पद पावे ।।25।।
बाबा पीर हरहिं सब भांति, जो सुमिरे निश्छल दिन राती ।।26।।
दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तिहारी ।।27।।
पंचदेव तुम पूर्ण प्रकाशा , सदा करो संतन मंह बासा ।।28।।

तारण तरण गंग का पानी, गंगाराम उभय सुनिशानी ।।29।।

कृपासिन्धु तुम हो सुखसागर, सफल मनोरथ करहु कृपाकर ।।30।।

झुंझुनूं नगर बड़ा बड़ भागी, जहं जन्में बाबा अनुरागी ।।31।।

पूरन ब्रम्ह सकल घटवासी, गंगाराम अमर अविनाशी ।।32।।

ब्रम्ह रूप देव अति भोला, कानन कुण्डल मुकुट अमोला ।।33।।

नित्यानन्द तेज सुख रासी, हरहुं निशातम करहुं प्रकासी ।।34।।

गंगादशहरा लागहि मेला, नगर झुंझुनूं मंह शुभ बेला ।।35।।

जो नर कीर्तन करहिं तुम्हारा, छवि निरखि मन हरष अपारा ।।36।।

प्रातः काल ले नाम तुम्हारा, चौरासी का हो निस्तारा ।।37।।

पंचदेव मन्दिर विख्याता, दरशन हित भगतन का तांता ।।38।।

जय श्री गंगाराम नाम की, भवतारण तरि परम धाम की ।।39।।

'महावीर' धर ध्यान पुनीता, विरचेउ गंगाराम सुगीता ।।40।।

दो. – सुने सुनावे प्रेम से, कीर्तन भजन सुनाम ।

मन इच्छा सब कामना, पूरई गंगाराम।।

।। इति शुभम् भूयात् ।।

अथ

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन चालीसा

सृष्टि लय पालन करे, अविनाशी सुख धाम।
अखिल विश्व चेतन करे , बाबा गंगाराम ।।
भक्त शिरोमणि करि कृपा,अपनाओ निज दास।
भक्ति भाव उर में भरो, देवो बुद्धि प्रकाश ।।

चौपाई

जय जय भक्त शिरोमणि नामा, गंगाराम सुवन सुख धामा ।।1।।
धन्य सो नगर जहां पे जाये , देवकीनन्दन नाम सुहाये ।।2।।
धन्य पितुहि जिन्ह पालन कीन्हा, जगती ले भक्ति वर दीन्हा ।।3।।
धन्य धन्य तिन्ह प्रिया प्रवीणा , जिन पति संग भक्ति रस लीन्हा ।।4।।
पुनि पुनि धन्यहि सन्तति सारी, संयमी, सुशील कठिन व्रत धारी ।।5।।
वैश्य वंश जस ध्वजा फराई , घर घर बाबा ज्योति जलाई ।।6।।
सौम्य स्वभाव, विमल, वैरागी, गंगाराम चरण अनुरागी ।।7।।
सबहि मान प्रिय आप अमानी, सहज सही सब कुजन कुबानी ।।8।।
निष्ठावान, निपुण, नय नागर, मोह निशा के लिये दिवाकर ।।9।।
प्रभु आज्ञा सपनेहुं मन मानी, मन्दिर बनवाने की ठानी ।।10।।
निज बन्धु खोदी मग खाई , मन महुं त्रास तनिक नहिं लाई ।।11।।
पामर जन बहु बात बनाई, मारे तीर विष वचन बुझाई ।।12।।

गंगाराम जेहि जनहि निहारे, कोटि कुटिल क्या करहि बिचारे ।।113।।

मन सब भांति भयेउ अशंका, बजा दिया जग जीत का डंका ।।14।।

भागीरथ जस गंगा आनी, तेहि करणी कीन्ही बड़ज्ञानी ।।15।।

आये सकल देव समुदाई, विश्वकर्मा ने नींव धराई ।।16।।

बन्यो शीघ्र झुंझुनूं मंह धामा, पंचदेव मन्दिर अभिरामा ।।17।।

सह परिजन तंह डेरा कीन्हा, दुर्जन दुराभाव जब चिन्हा ।।18।।

देव हेतु तनु मनु धनु त्यागा, अविरल भक्ति का वर मांगा ।।19।।

प्रभु प्रसाद कर सब धन बांट्यो,जन जन को सब संकट काट्यो ।।20।।

एकहि व्रत और एकहि नेमा, पावन नाम जो रटहि सप्रेमा ।।21।।

जग हित नित संकट सहे भारी, मान अमान व रोष बिसारी ।।22।।

जीवन सकल कियो संग्रामा, संतति सम्बल प्रेरक वामा ।।23।।

निज निर्वाणहि अवसर जानी, उर पीड़ा निज मुखहि बखानी ।।24।।

कलि कलेष द्वन्द चहुं ओरा, दो पग रखने को नहीं ठोरा ।।25।।

निश्चय रूप भगत वर बानी, समुझि सकी नहीं बुद्धि अयानी ।।26।।

मुख ते गंगाराम उचारे, तनहि त्यागि प्रभु धाम सिधारे ।।27।।

महिमा एको न जानन पाई, ज्योति ज्योति के मांहि समाई ।।28।।

चढ़हि चिता बहु रूप बनायो, भक्तिहि सत्य प्रमाण दिखायो ।।29।।

गायत्री ने विनती कीन्हीं, सूर्यदेव निज साखी दीन्हीं ।।30।।

चमत्कार पावक मंह कीन्हा, भुजा उठा जग आशीष दीन्हा ।।31।।

असुरन हेतु खड़ग समानू, मुनि मन कमल हेतु जनु भानू ।।32।।

शीश प्रकट भई सुरसरि धारा, पल में पुनित किये जग सारा ।।33।।

बालरूप तब आपहिं धरहिं, सुरन सबहि मिल जय धुनि करहिं ।।34।।

जड़ चेतन, चेतन जड़ होई, चित्र लिखित से भये सब कोई ।।35।।

शारद शेष सकहि नहीं बरणी, देवकीनन्दन करि जस करणी ।।36।।

गंगाराम भजन जहं होहहिं, भक्त शिरोमणि अवश्यहि सोहहिं ।।37।।

भक्त शिरोमणि के अवराधे, बाबा कारज सकलहि साधे ।।38।।

जो नित यह चालीसा गावे, कामहि कटे भक्ति उर आवे ।।39।।

देवकीनन्दन पद चित लावे, जग सुख भोग अमर पद पावे ।।40।।

दोहा.— मम मन माया में बन्ध्यो, चित दौड़े चहुं ओर ।
अब तो भक्त शिरोमणि, निज चरणन दो ठौर ।।
जग के बन्धन काटकर, मेटो मम संताप ।
बाबा गंगाराम सहित, हृदय विराजो आप ।।

।। इति शुभम् भुयात ।।

श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन अष्टक

स्वपनेहु प्रभु आदेश दियो, सुत को अमृतमय बैन उचारो ।
तारण कारण हेतु कलि में, नारायण अवतार है धारो ।।
पंचदेवों के संग हमारो, बनवाओ तुम धाम सुप्यारो ।
जग जानत है भक्त शिरोमणि, देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।1।।

जग हित प्रभु सन्देश सुन्यो तब, भक्त शिरोमणि मंत्र विचारो।
दुर्जन त्रास दई बहु भांति, सहज सह्यो सब कष्ट अपारो ।।
धर्म ध्वजा फहराई जग में, देवकीनन्दन सत प्रण धारो ।
जग जानत है भक्त शिरोमणि, देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।2।।

मन्दिर भव्य बन्यो झुंझुनूं में, सब देवन के लोक से न्यारो ।
शिव, लक्ष्मी, हनुमान, भवानी, बाबा संग लगे अति प्यारो।।
विष्णु अवतारी को धाम सुपावन, सुर नर मुनि मन हर्ष अपारो।
जग जानत है भक्त शिरोमणि , देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।3।।

सेवा भक्ति अर्चन हेतु , मन्दिर वास को सुव्रत धारो ।
निज कर संचित धन राशि को, अर्पण कर वितरण कर डारो।।
बाबा भक्ति हेतु महामुनि, तन मन धन सुख सन्तति वारो ।
जग जानत है भक्त शिरोमणि, देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।4।।

गंगाराम को नाम महाव्रत , देवकीनन्दन हिरदय धारो ।
शम्भू समान जगत हित कीन्हों, मारूतिनन्दन रूप तिहारो ।।
त्याग, तपस्या, भक्ति देखहिं, गावहिं सब जन सुयश तिहारो।
जग जानत है भक्त शिरोमणि, देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।5।।

क्लेष कलि कलुषित फैल्यो जग, निर्बल को नहीं कोई सहारो।
लोभ कपट पाखण्ड प्रबल लखि, भक्त ने आत्मप्रयाण विचारो।।
गंगाराम कह वीर योगेश्वर , तृण सम तन पल में तज डारो।
जग जानत है भक्त शिरोमणि ,देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।6।।

आशीर्वाद चिता से दियो तब, चारिहुं ओर लग्यो जयकारो ।
सुरसरि धार बही सिर तें प्रभु , विश्व सकल पावन कर डारो।।
बालरूप तब धार्यो महाप्रभु , जग अभिभूत भयो तब सारो ।
जग जानत है भक्त शिरोमणि ,देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।7।।

शरणागत आवत आरत जो , मांगत है अवलम्ब तिहारो ।
तीनों ताप मिटे उसके प्रभु , संसृति संशय सकल निवारो।।
हे रणधीर , हे सत्यवीर तुम , संकट काटो आज हमारो।।
जग जानत है भक्त शिरोमणि , देवकीनन्दन नाम तिहारो ।।8।।

दोहा— त्याग भक्ति अनुपम करी, चतुर सुजान प्रवीण।
पावन पद भक्ति देवो, जय जय तपो धुरीण।।

श्री बाबा गंगाराम दोहावली

जड़ चेतन में व्याप्त तू , बैठा चारों धाम ।
हर जीवों में बोलता , बाबा गंगाराम ।। 1।।

गंगाजी जग पावनी , सबके आश्रय राम ।
दोनों के संगम बने , बाबा गंगाराम ।। 2।।

मल धोये गंगा सलिल , असुर संहारे राम ।
दोनों कारज सिद्ध करे , बाबा गंगाराम ।। 3।।

गंगा जल तन पुष्टि करे, मन तुष्टि करे राम ।
तन मन की तुष्टि करे , बाबा गंगाराम ।। 4।।

सुरसरि अवतरि शिव जटा, दशरथ के घर राम ।
वैश्य वंश में प्रगट भये , बाबा गंगाराम ।। 5।।

दायें भाग शिव लक्ष्मी , हनुमत दुर्गा वाम ।
सबके मध्य विराजते , बाबा गंगाराम ।। 6।।

नृसिंह रूप प्रभु आप हैं, छवि बड़ी अभिराम ।
भक्त शिरोमणि का कथन , बाबा गंगाराम ।। 7।।

नाना तन धरि अरि हर्यो, बने राम घनश्याम ।
कलि में छिप लीला करे , बाबा गंगाराम ।। 8।।

जो जांहि के चित चढ़्यो, सो तांहि को राम ।
अपने तो हरि आप हैं , बाबा गंगाराम ।। 9।।
जग आया और चल दिया, घुट घुट गये तमाम ।
धन्य जन्म उस भक्त का , बाबा गंगाराम ।।10।।
जगती देय भक्ति लई , सारे जग के काम ।
इन भक्तों का तपोबल , बाबा गंगाराम ।।11।।
भक्तों की पद रज जहां, वहीं आपका धाम ।
तुलसी दल धरि शीश पे , बाबा गंगाराम ।।12।।
भक्तों के मुख का कथन, श्रुति पुराण सुखधाम ।
सुधा वाक्य श्रवननि करो , बाबा गंगाराम ।।13।।
पढ़े पुराण अष्टदश , अरू इतिहास तमाम ।
ऐसी महिमा ना पढ़ी , बाबा गंगाराम ।।14।।
लखन चहत तुलसी प्रभु ,हनुमत सार्या काम ।
भक्त शिरोमणि ते मिले , बाबा गंगाराम ।।15।।
भजले भक्त शिरोमणि , देवकीनन्दन नाम ।
जांके सुमिरण ते मिले , बाबा गंगाराम ।।16।।
भक्त शिरोमणि वरदहस्त, हरे सकल संताप ।

वही हाथ मम शीश पर , राखो गंगाराम ।।17।।

अष्ट सिद्धि व नव निधि, वैकुण्ठा का धाम ।

तव अनुग्रह बिनु ना मिले, बाबा गंगाराम ।।18।।

नहि तप बल नहि तप जतन ,नहीं भजन से काम।

आरत की आरति हरो, बाबा गंगाराम ।।19।।

दर दर भटक्यो रोवतो, मिल्यो नहीं विश्राम ।

शरणागत की बांह गहो, बाबा गंगाराम ।।20।।

तन दुखित मन व्यथित भयो, रोयो आठों याम ।

शरण पड़े को थाम लो, बाबा गंगाराम ।।21।।

दुनिया दौलत ढूंढती , बड़ा धनी का नाम ।

आप मिले सब कुछ मिले, बाबा गंगाराम ।।22।।

तन कांपे मन रूद्ध भयो, नयन झरे अविराम ।

पलक एक निहार लो , बाबा गंगाराम ।।23।।

पाप की गठरी शीश पे, मन बान्ध्यो है काम ।

पतित पावन आप हैं, बाबा गंगाराम ।।24।।

घट घट वासी आप प्रभु, कहने को क्या काम ।

मम इच्छा पूरण करो , बाबा गंगाराम ।।25।।

आरती श्री बाबा गंगाराम की

जय श्री गंगाराम, बाबा जय श्री गंगाराम ।
नारायण अवतारी, सत् चित् आनन्द धाम ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

सत्य स्वरूप सनातन , नित लीला धारी ।
कलिमल तिमिर निवारक, जग पालनहारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

तुम वैकुण्ठ विहारी, अगणित गुणराशी ।
झुंझुनूं धाम निवासी, घट घट के वासी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

श्वेतवर्ण पीताम्बर , वनमाला धारी ।
कोटि सूर्य सम शोभा, दर्शन शुभकारी ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

देवकीनन्दन को प्रभु ,स्वप्न में दरश दियो ।

पावन धाम बनाकर, जग कल्याण कियो ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

पंचदेव मन्दिर में, राजत है ज्योति ।

भक्तों की मन वांच्छा, जहं पूरण होती ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

हम अति दीन अकिंचन, दया दृष्टि कीजै ।

कृपा करो करूणामय, चरण शरण लीजै ।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

गंगाराम प्रभु की , आरती जो गावे ।

भुक्ति मुक्ति, धन सम्पद, अतिशय सुख पावे।।

बाबा जय श्री गंगाराम।।

बोलिये

बाबा गंगाराम की जय ।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन की जय ।।